सुकुमार बोस

सुकुमार बोस (12 मई 1912 - 10 नवंबर 1986) दिल्ली स्थित एक भारतीय कलाकार थे, जिन्होंने असित कुमार हलधर के अधीन बंगाल स्कूल की परंपरा में प्रशिक्षण प्राप्त किया था ।

प्रारंभिक जीवन

सुकुमार बोस का जन्म 12 मई 1912 को लखनऊ , उत्तर प्रदेश, भारत में सनत कुमार बोस और बीना पाणि बोस के घर हुआ था। बोस के दादा बिपिन बिहारी बोस लखनऊ बार के एक सफल वकील थे। ब्रह्मो समाज आंदोलन से जुड़े बोस परिवार लखनऊ में एक प्रभावशाली उच्च-मध्यम वर्गीय बंगाली परिवार था, जहाँ वे बंगाल की कला और संस्कृति को बढ़ावा देने में सक्रिय रूप से शामिल थे। 1936 में, सुकुमार बोस ने बेला चौधरी से विवाह किया।

असित कुमार हलदर लखनऊ में सरकारी कला महाविद्यालय का नेतृत्व करने के लिए आने के बाद परिवार के अच्छे दोस्त बन गए। असित कुमार हलदर लेखक और कवि रवींद्रनाथ टैगोर के करीबी रिश्तेदार थे (हलदर टैगोर की बड़ी बहन के पोते थे)। हलदर की शिक्षा शांतिनिकेतन में रवींद्रनाथ टैगोर के सीधे मार्गदर्शन में हुई थी ।

जब बोस की रुचि ललित कलाओं की ओर बढ़ी तो उन्होंने सरकारी कला महाविद्यालय में दाखिला ले लिया और हलधर के व्यक्तिगत मार्गदर्शन में कला का अध्ययन किया।

कैरियर

1932 में 20 साल की उम्र में सुकुमार बोस को मॉडर्न स्कूल दिल्ली में कला शिक्षक नियुक्त किया गया। बोस ने 1947 तक स्कूल में पढ़ाया। बोस को, सरदा उकील सहित अपने पूर्ववर्तियों के साथ, उत्तर भारत में बंगाल स्कूल कला परंपरा और शैली को पेश करने का श्रेय दिया जाता है।

अपने कलात्मक करियर के दौरान, बोस भारतीय कला और संस्कृति के प्रचार में सक्रिय रूप से शामिल रहे। वे अखिल भारतीय ललित कला और शिल्प सोसायटी (AIFACS) के अग्रणी सदस्य थे, जो आज के राज्य द्वारा संचालित ललित कला अकादमी का अग्रदूत है। AIFACS के एक सक्रिय सदस्य के रूप में , वे द्वि-वार्षिक कला पत्रिका रूपा लेखा के प्रकाशन में शामिल थे।

बोस की सोसायटी की सदस्यता में निम्नलिखित शामिल थे:

1. शासी परिषद, अखिल भारतीय ललित कला एवं शिल्प सोसायटी
2. सेना मुख्यालय नाट्य सोसायटी, नई दिल्ली
3. तकनीकी शिक्षा बोर्ड, दिल्ली

1950 में, बोस को रोमन कैथोलिक चर्च के तत्कालीन प्रमुख, आदरणीय पोप पायस XII द्वारा ईसाई विषय पर भारतीय शैली में एक कृति तैयार करने का काम सौंपा गया था। यह कृति, "द नेटिविटी - द बर्थ ऑफ क्राइस्ट" वेटिकन में रखी गई है ।

1952 और 1960 के बीच, बोस ने यूनाइटेड किंगडम , संयुक्त राज्य अमेरिका , ऑस्ट्रेलिया और पूर्व सोवियत संघ के साथ-साथ भारत भर के शहरों में कई एकल प्रदर्शनियों का आयोजन किया ।

1972 में सेवानिवृत्त होने पर बोस को तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी.वी. गिरि का मानद कला सलाहकार नियुक्त किया गया । बोस 1974 तक इस पद पर रहे।

कार्य

सुकुमार बोस की शैली को इंडो-फ़ारसी कहा जा सकता है। उन्होंने काले, लाल, सुनहरे और चांदी जैसे ठोस रंगों का इस्तेमाल किया, लेकिन हल्के स्वरों में। बोस ने कई भित्ति चित्र और भित्तिचित्र बनाए। उनकी कुछ सबसे आकर्षक दीवार पेंटिंग राष्ट्रपति भवन में हैं ।

बोस ने पुरानी और नई तकनीकों को मिलाकर आधुनिक कला में भी कदम रखा। हालाँकि, बोस हमेशा यथार्थवाद के शास्त्रीय सिद्धांतों का पालन करते थे। अपनी कला शिक्षा के परिणामस्वरूप, बोस अधिक परंपरावादी थे, जो व्याख्या की अधिक अमूर्त शैलियों पर यथार्थवाद को प्राथमिकता देते थे। बॉम्बे क्रॉनिकल द्वारा "बहुमुखी कलाकार" के रूप में वर्णित, बोस तकनीक सीखने में दृढ़ विश्वास रखते थे। उनके लिए, जो कोई भी इसके विपरीत तर्क देता है, वह केवल "एक स्थिर और कठिन शारीरिक और बौद्धिक कठिनाई को झेलने में असमर्थ है।

पुरस्कार

1970 पद्म श्री पुरस्कार [3]